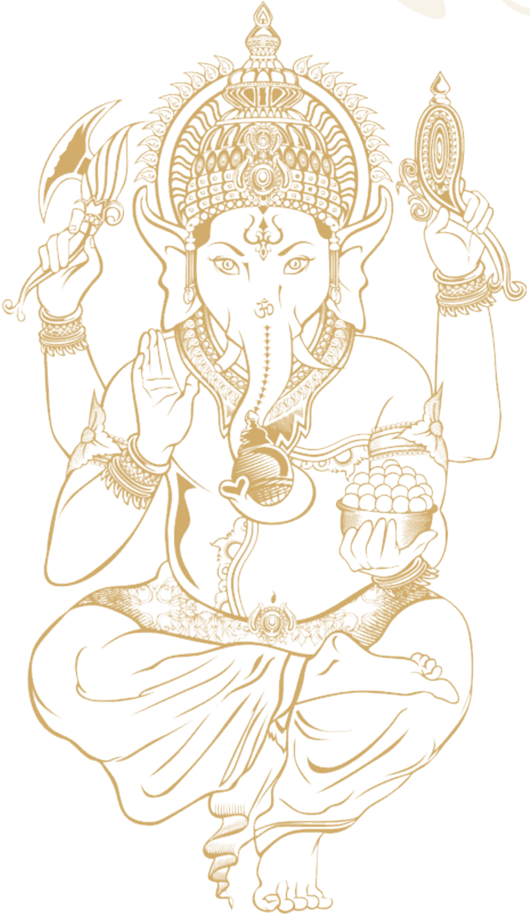

P Nagpal

Himanshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121407301

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19-20/11/1997	जन्म तिथि	13/07/1999
बुध-गुरुवार	दिन	मंगलवार
घंटे 00:40:00	जन्म समय	14:33:00 घंटे
घटी 44:42:14	जन्म समय(घटी)	22:32:46 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:47:06	सूर्योदय	05:31:53
17:25:33	सूर्यास्त	19:21:24
23:49:34	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:50
सिंह	लग्न	तुला
सूर्य	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
कर्क	राशि	कर्क
चन्द्र	राशि-स्वामी	चन्द्र
पुष्य	नक्षत्र	पुनर्वसु
शनि	नक्षत्र स्वामी	गुरु
2	चरण	4
शुक्ल	योग	हर्षण
गर	करण	किंस्तुघ्न
हे-हेमन्त	जन्म नामाक्षर	ही-हिना
वृश्चिक	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
विप्र	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	जलचर
मेष	योनि	मार्जार
देव	गण	देव
मध्य	नाड़ी	आद्य
मेष	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 10वर्ष 9मा 26दि		12:58:39	सिंह	लग्न	तुला	22:52:33	गुरु 3वर्ष 5मा 0दि	
केतु		03:39:55	वृश्चि	सूर्य	मिथु	26:42:07	बुध	
16/09/2025		09:04:18	कर्क	चंद्र	कर्क	00:29:06	12/12/2021	
16/09/2032		14:10:11	धनु	मंगल	तुला	09:07:46	13/12/2038	
केतु	12/02/2026	23:22:45	वृश्चि	बुध व	कर्क	15:38:13	बुध	10/05/2024
शुक्र	14/04/2027	21:08:04	मक	गुरु	मेष	08:17:51	केतु	07/05/2025
सूर्य	20/08/2027	19:56:30	धनु	शुक्र	सिंह	06:32:45	शुक्र	07/03/2028
चन्द्र	20/03/2028	20:20:17	मीन व	शनि	मेष	21:24:59	सूर्य	11/01/2029
मंगल	16/08/2028	22:59:38	सिंह व	राहु व	कर्क	19:09:30	चन्द्र	13/06/2030
राहु	04/09/2029	22:59:38	कुंभ व	केतु व	मक	19:09:30	मंगल	10/06/2031
गुरु	11/08/2030	11:27:58	मक	हर्ष व	मक	21:56:18	राहु	27/12/2033
शनि	19/09/2031	03:49:57	मक	नेप व	मक	09:28:40	गुरु	03/04/2036
बुध	16/09/2032	11:20:03	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	14:14:21	शनि	13/12/2038

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:49:34 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:50

लग्न-चलित

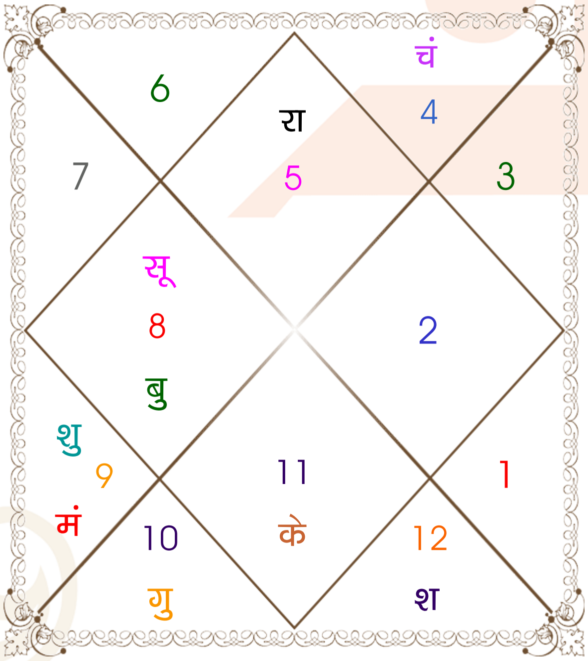

लग्न-चलित

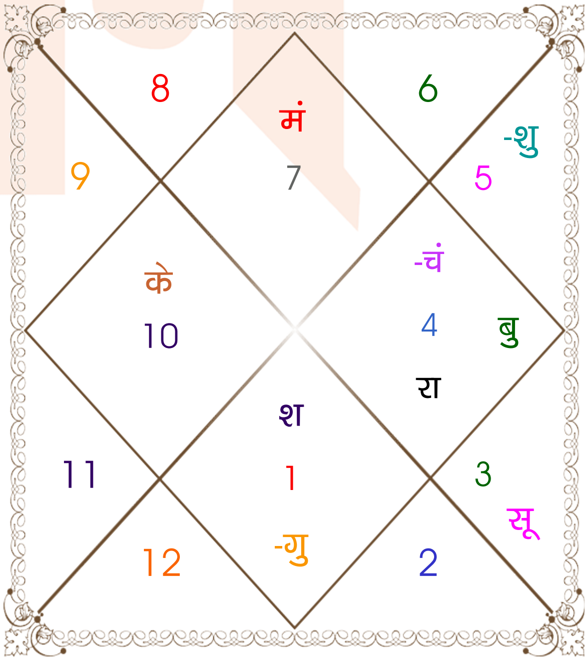

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मेष	मार्जार	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	चन्द्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	35.00		

कुल : 35 / 36

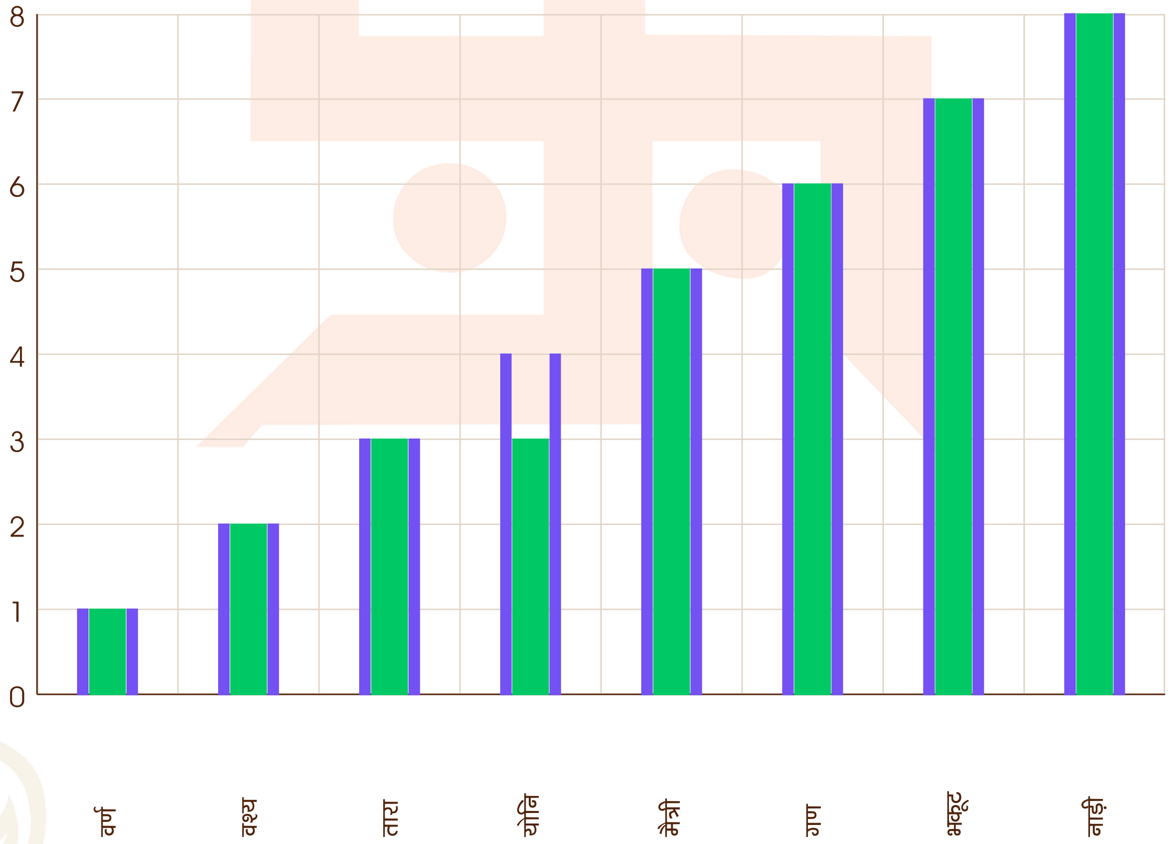

अष्टकूट मिलान

इस मिलान में नक्षत्र दोष भी विधमान है।

च छंहचंस का वर्ग मेष है तथा भ्पउंदीप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च छंहचंस और भ्पउंदीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

च छंहचंस मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

भ्पउंदीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु च छंहचंस कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

च छंहचंस तथा भ्पउंदीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

च छंहचंस का वर्ण ब्राह्मण तथा भ्पउंदीप का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

च छंहचंस का वश्य जलचर है एवं भ्पउंदीप का वश्य भी जलचर है अर्थात दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों की शारीरिक स्थिति, स्वभाव, पसंद एवं नापसंद एक ही तरह के होंगे। दोनों के बीच अगाध प्रेम एवं सौहार्द बना रहेगा तथा समान दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी समझ होने के कारण एक-दूसरे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते रहेंगे। दोनों एक-दूसरे के कामों में मदद करते रहेंगे तथा परिवार की प्रगति एवं समृद्धि में महती योगदान देंगे।

तारा

च छंहचंस की तारा सम्पत तथा भ्पउंदीप की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से च छंहचंस   एवं भ्पउंदीप दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। भ्पउंदीप एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

च छंहचंस की योनि मेष है तथा भ्पउंदीप की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना

रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में च छंहचंस एवं भ्पउंदीप दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि च छंहचंस एवं भ्पउंदीप दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

च छंहचंस का गण देव तथा भ्पउंदीप का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

च छंहचंस एवं भ्पउंदीप दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान च छंहचंस एवं भ्पउंदीप तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

च छंहचंस की नाड़ी मध्य है तथा भ्पउंदीप की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

च छंहचंस और भ्पउंदीप दोनों की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। अतः इनमें स्वभावगत समानताएं रहेंगी तथा जीवन भी आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। उनमें परस्पर स्नेह सहानुभूति एवं आकर्षण का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

च छंहचंस और भ्पउंदीप दोनों की राशि का स्वामी चन्द्रमा है। यह स्थिति सुखद दाम्पत्य जीवन के लिए अत्यंत ही शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से च छंहचंस और भ्पउंदीप दोनों भावुक बुद्धिमान तथा आपस में सामंजस्य स्थापित करने वाले होंगे तथा प्रेम पूर्वक अपना वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। इनके जीवन मूल्य एवं सिद्धातों में समानता रहेगी अतः समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

च छंहचंस और भ्पउंदीप की राशियां परस्पर प्रथम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से भविष्य की योजनाओं में इनको सफलता मिलेगी। यद्यपि भ्पउंदीप की महत्वाकांक्षाएं प्रबल नहीं होगी तथापि अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल रहेंगी। च छंहचंस और भ्पउंदीप निस्वार्थ भाव से एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं समानता का भाव रखेंगे तथा एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

च छंहचंस और भ्पउंदीप दोनों का वश्य जलचर है। अतः इसके प्रभाव से इनकी शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर पूर्ण समता रहेगी तथा अभिरूचियों में भी अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण आकर्षण तथा आत्मीयता का भाव रहेगा। साथ ही कामभावनाओं में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनी रहेगी ।

च छंहचंस और भ्पउंदीप दोनों का वर्ण ब्राह्मण है। अतः शैक्षणिक क्षेत्र शास्त्रीय विषय या धर्म संबधी कार्य कलापों में दोनों की रूचि रहेगी तथा कार्य क्षमता भी बराबर रहेगी। साथ ही जीवन के सिद्धांत एवं मूल्यों में भी एक रूपता रहेगी जिससे च छंहचंस और भ्पउंदीप का जीवन सुख शांति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

धन

च छंहचंस की तारा सम्पत तथा भ्पउंदीप की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से च छंहचंस सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा भ्पउंदीप के भाग्य से उनकी धन सम्पति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

च छंहचंस और भ्पउंदीप को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से भ्पउंदीप का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

च छंहचंस की नाड़ी मध्य तथा भ्पउंदीप की नाड़ी आद्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका कोई दुष्प्रभाव इन पर नहीं पड़ेगा परन्तु मंगल की स्थिति प्रतिकूल रहेगी जिसके प्रभाव से च छंहचंस रक्त तथा पित विकार से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही हृदय रोग संबधी परेशानी भी होगी एवं रतिक्रिया संबंधी निष्क्रियता के भाव की भी उत्पत्ति की संभावना रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति की संभावना उत्पन्न होगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए च छंहचंस को हनुमान जी की नियमित पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार का उपवास करना चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से च छंहचंस और भ्पउंदीप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त च छंहचंस और भ्पउंदीप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में भ्पउंदीप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन भ्पउंदीप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में भ्पउंदीप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से च छंहचंस और भ्पउंदीप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार च छंहचंस और भ्पउंदीप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

भ्पउंदीप के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके

विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। भ्पउंदीप भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा भ्पउंदीप भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का भ्पउंदीप को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

च छंहचंस तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में च छंहचंस के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से च छंहचंस के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण च छंहचंस के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।